P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-V*January-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

'कठगुलाब' : नारी अस्मिता के प्रश्न मृदुला गर्ग

उर्मिला शर्मा
अतिथि प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
रामजस कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांश

'गरीबों में भी सबसे गरीब औरत है' यह कथन महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्षरत संगठन 'जागोरी' की सह–संस्थापक और दक्षिण एशियाई नारीवादी नेटवर्क संगत की सलाहकार कमला भसीन का है। समाज में औरत का स्थान निर्धारित करने का प्रश्न तब उठा जब वह स्वयं अपना स्थान तलाशने लगी। वह जिस स्थान पर खड़ी है वहीं क्यों है? जिन सीमाओं में रहकर वह जीने को बाध्य है, क्या उन सीमाओं के बाहर भी कोई अन्य दुनिया है? क्या कुछ अन्य रास्ते हैं जो इन थोंपे गए या बताए गए रास्तों से अलग हों? जो जीवन वह जी रही है क्या इससे बेहतर संभावनाएँ भी हैं? संभावनाओं की तलाश से ही औरत अनेक स्तरों पर अपनी स्वयं की भी तलाश शुरू करती है। चूँकि वह समाज का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन उसी के हिस्से में कुछ नहीं होता। वह समाज में एक माँ, एक बहन, एक बेटी, एक पत्नी अनेक रूपों का निर्वहन करती है लेकिन जब वह केवल 'मैं' बनकर सोचती है तो अनेक अर्न्तविरोधों और कठिनाइयों का उसे सामना करना पड़ता है।

चूँकि साहित्य को समाज ही आधार प्रदान करता है और साहित्य समाज से ही खाद–बीज ग्रहण कर फलता–फूलता है, यहीं से साहित्य में 'अस्मिता' शब्द का प्रस्फुटन होता है। हिन्दी शब्द कोश के अनुसार अस्मिता के मायने, अहभाव, अपनी सत्ता का भाव, आशा, अहंकार और अभिमान आदि हैं। साहित्य इन्हीं शब्दों से गुजरते हुए 'अस्मिता' शब्द को नए अर्थ में ग्रहण करता है।

मुख्य शब्द : अस्मिता को तलाशते कठगुलाब के स्त्री–पात्रः

परिचय

भारत में स्त्री को देवी माना जाता है। लेकिन वह क्या केवल वस्तु मात्र है? हर धर्म में औरत को दूसरा दर्जा दिया जाता है। एक प्रकार से उसे हाशिए पर रखा जाता है। इन सब के पीछे क्या केवल औरत का प्राकृतिक स्वभाव है? या इन के पीछे केवल संस्कार? या दोनों का मिला–जुला रूप? स्थितियों–परिस्थितियों से जूझते पात्रों और परिवेश का निर्माण 'कठगुलाब' नामक उपन्यास में मृदुला गर्ग द्वारा एक नए अन्दाज में हमारे सामने आता है। फ्लैश बैक शैली में लिखा गया यह उपन्यास 1996 ई. में प्रकाशित होता है। बीसवीं शदी के उत्तरार्द्ध में प्रकाशन के साथ ही उपन्यास तीन पीढ़ियों की महिलाओं की उपस्थिति दर्ज कराने में सक्षम होता है। 'उसके हिस्से की धूप', 'वंशज', 'चित्तकोबरा' तथा 'मैं और मैं' इससे पहले प्रकाशित हो चुके थे। अश्लीलता के आरोपों के चलते 'चित्तकोबरा' चर्चा का विषय रहा। लेखिका की गिरफतारी भी हुई। लेकिन इसके बाद 'कठगुलाब' का प्रकाशन अपने–आप में विशेष महत्त्व रखता है। यह उपन्यास नारी अस्मिता की केवल पड़ताल ही नहीं करता वरन् साहित्य में पुरुष–मानसिकता ने नारी को जो मुखौटे पहना रखे थे उन्हें उतार फेंकने का साहस भी करता है। एक ओर जहाँ मातृत्व और वात्सल्य का मुखौटा उतरता है वहीं, जलनखोर दूसरी औरत का। वह क्षमाशील देवी या सती भी बनकर नहीं रहना चाहती। वह नव–सृजन में विश्वास रखती है। चाहे अपने ही जीजा द्वारा बलात्कारित अभागी स्मिता हो, या पति द्वारा छली गई 'मारियान', चाहे एक आत्मनिर्भर लड़की के रूप में 'असीमा' हो या परित्यक्ता दर्जिन बीबी। गनपत जीजा द्वारा जबरन् विवाह की वेदी पर चढ़ी और भोगी 'नर्मदा' हो या जिंदगी को चुनौती के रूप में स्वीकार करने वाली 'नमिता' की बेटी 'नीरजा'। ये पात्र स्थितियों से समझौता नहीं करते। चुनौतियों को स्वीकार करते हैं तथा स्व की पहचान पाने का सपफल प्रयास भी करते हैं।

स्मिता भारतीय चिन्तन की जड़ों को पकड़कर उपन्यास में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। भारतीय चिंतन में मिट्टी की महत्ता की स्वीकृति का जिक्र करती है और उस नरक का भी जहाँ से बीस वर्ष पहले वह निकल भागी थी। स्मिता ने स्कॉलरशिप प्राप्त कर बी.एस सी की पढ़ाई प्रथम श्रेणी में की

लेकिन वह अभी विवाह नहीं करना चाहती, वह आगे पढ़ना चाहती है और उसी के बलबूते अपनी पहचान तलाशना चाहती है। माता–पिता की मृत्यु के बाद वह बड़ी बहन नमिता के घर शरण लेती है, जहाँ जीजा के द्वारा उसका बलात्कार किया जाता है और यहीं से स्मिता अपने अंदर छिपी अस्मिता की तलाश शुरू करती है। वह बड़ौदा की बजाय कानपुर पहुँचती है और अपना पता किसी को नहीं देती। अपनी सहेली असीमा को भी नहीं। स्मिता दिन–रात मेहनत करती है और अमरीका पहुँचती है। परन्तु स्मिता के मन में प्रतिशोध की ज्वाला धधकती रहती है। कभी–कभी वह अपने–आप को धिक्कारती भी है क्योंकि उसका प्रतिशोध ईश्वर ले चुका है। अमरीका जाकर अमृद्ध होने की प्रेरणा को कभी वह प्रतिरोध को मानती है तथा कभी उसे पलायन स्वीकार करती है।

अमरीका में 'जिम जारविस' एक साइक्याट्रिस्ट से वह विवाह करती है। इलाज के दौरान जिम उसे आत्ममुग्ध्ता तथा अपराध बोध से अछूती और मुक्त स्त्री बताकर चमत्कार और करिश्मे की संज्ञा देता है, वहीं विवाह के बाद इन दोनों को वह अभिशाप मानता है। स्मिता जो कि एक भारतीय स्त्री है और अमरीकन पुरुष से विवाह करती है, फिर भी स्थितियों में कोई खास अन्तर नहीं देख पाती बरक्स भारतीय स्थितियों के वह 'जिम जारविस' के साथ नहीं रह पाती क्योंकि जारविस चाहता है केवल अपनी तुष्टि, अपना संतोष और स्मिता स्वयं की एक पहचान, स्मिता की स्थितियाँ बेकाबू तब हो जाती हैं जब जारविस को यह पता चलता है कि स्मिता उससे कुछ छिपा रही है।

यहाँ पुरुष अहमंन्यता को ठेस पहुँचती है और जारविस बेकाबू हो स्मिता को प्रताड़ित तो करता ही है साथ ही शारीरिक चोट देकर स्मिता के गर्भपात का कारण भी बनता है। प्राकृतिक रूप से औरत को माँ बनने का अधिकार है या कहें कि एक सुख है जिसे पुरुष कभी प्राप्त नहीं कर सकता। लेकिन इसी को हथियार बनाकर स्त्री–पुरुष वार भी करता है और स्त्री कटी पतंग की तरह अपने को आधार हीन महसूस करती है। स्त्री अस्मिता के संदर्भ में मृदुला गर्ग यहाँ स्वभाव और संस्कार के बीच झाँककर देखना चाहती हैं। यहाँ स्मिता आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। स्वभावगत जैविक प्रकृति के चलते उसे माँ बनने का अधिकार है परन्तु उसके संस्कार उसे कमजोर महसूस करने और रोने पर मजबूर कर देते हैं। परंतु वह फिर से उठने में अपने आपको सक्षम बनाती है। रिलीफ फॉर एब्यूज्ड विमेन 'रा' में नौकरी करते हुए एक बार वह जारविस के खिलाफ केस लड़ती है परन्तु हार के अलावा उसे मनोविकृति का शिकार भी ठहराया जाता है। जारविस का छल प्रपंच स्मिता को जीतने नहीं देता। स्मिता के खिलाफ ऐसा ही घिनौना प्रपंच जीजा का भी था, जहाँ कहीं न कहीं नमिता उसकी सगी बहन भी साथ होती थी। प्रश्न यहाँ केवल पुरुष की सोच का ही नहीं है अपितु एक स्त्री किस प्रकार दूसरी स्त्री को तार–तार होते देखती रहती है, इसका भी है। दूसरी स्त्री शारीरिक हिंसा भले ही न करती हो मानसिक हिंसा अवश्य करती है।

स्मिता में सौन्दर्य बोध और कर्मठता अपार है और इन्हीं के चलते वह बीस वर्ष बाद भारत लौटने का साहस जुटा पाती है। स्मिता आत्मबल से विजय पाना चाहती है और समाज में नवसृजन की ओर कदम बढ़ाती है। 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में 'नारीत्व का अभिशाप' नामक निबंध में महादेवी वर्मा इसी आत्मबल की बात करते हुए कहती हैं–''विशेषकर नारी के लिए पशुबल की न्यूनता को आत्मबल से पूर्ण कर लेना स्वभाव सिद्ध है।'' स्मिता इसी आत्मबल के सहारे विपिन जैसे प्रेमी को नकार आगे बढ़ना स्वीकार करती है, तो साथ ही गोधड़ में समाज–सेवा का व्रत ले उसके संचालन में ही संतोष प्राप्त करती है।

मारियान के रूप में लेखिका एक ऐसी स्त्री को पेश करती है जो तमाम मर्दों को अत्याचारी, खुदगर्ज और जालिम नहीं ठहराती है।''मैं यह मानने को तैयार नहीं थी। ऐसा नहीं था कि मैंने कभी किसी मर्द के हाथों चोट नहीं खाई थी। पर मैं तमाम मर्दों को एक ही खाँचे में डालने को तैयार नहीं थी।''मारियान स्त्री अस्मिता के संदर्भ में ऐसे प्रश्नों से साक्षात्कार कराती है जो इस उत्तर की प्रतीक्षा में होते हैं कि किन विशेष परिस्थितियों में एक स्त्री पुरुष के हाथों की कठपुतली बन जाती है? मारियान कहीं न कहीं अपनी माँ 'वजर्निया' द्वारा भी प्रताड़ित की जाती है। 'वजर्निया' रूप और पैसे को ही सब कुछ मानती है और मारियान के पिता को कंगला कहती है जिससे बढ़कर अमेरिका में कोई गाली नहीं है। मारियान का सौतेला बाप 'जार्ज' कभी भी उसके साथ सौतेला व्यवहार नहीं करता सिवाय जायदाद में हिस्सेदारी के। वहाँ भी कम अजकम ऊँची यूनिवर्सिटी में शिक्षा तथा तीन बेडरूम वाला फ्लैट वह मारियान के नाम कर देता है। यहाँ सर्वप्रथम मारियान को मानसिक पीड़ा उसकी अपनी माँ द्वारा दी जाती है। मारियान तथा वर्जिनिया के माध्यम से लेखिका महिला के प्रति महिला का पितृसत्तात्मक चेहरा समने लाती है।

मारियान इर्विंग ह्विटमेन से शादी करती है उसके भीतर वे गुण देखकर जिनका वह बचपन से अभाव भोगती आई थी। इर्विंग का नाम उसे कविनुमा लगा था और वह पैसे के प्रति भी उदासीनता दर्शाता था। मारियान ह्वीटन कॉलेज में सोशियोलॉजी की लेक्चरर अपाइंट हो चुकी थी। लेकिन यहाँ स्त्री अस्मिता के प्रश्न दूसरे रूप में उभरे। इर्विंग ने एक ओर उसकी रचनाशीलता का बलात्कार किया तथा भविष्य के सपने दिखाकर दूसरी ओर उसे गर्भपात के लिए राजी भी कर लेता है। सामाजिक स्थितियाँ अलग, तो स्त्री अस्मिता के प्रश्न भी अलग। लेकिन सार सब का वही। अपनी पहचान को तलाशना, उसे खोने से बचाना।

कठगुलाब में मारियान हो चाहे स्मिता हो दोनों ही समझौतावादी नहीं है। वे गिरती हैं, लेकिन संभलने में अधिक समय नहीं लगाती। वे आगे बढ़ने में विश्वास रखती हैं। मारियान भी स्मिता की तरह इर्विंग को कचहरी में घसीटती है चाहे वहाँ उसे हार का ही सामना क्यों नहीं करना पड़ा। एक बात जो मारियान के संदर्भ में मायने रखती है वह है इर्विंग की अस्मिता के खतरे की। इर्विंग को मालूम है कि वह मारियान का सम्पूर्ण इस्तेमाल

उपन्यास लिखने में कर रहा है। उसे यह भनक भी लग जाती है कि मारियान उपन्यास के एक पात्र 'रूथ' का विवरण उस प्रकार से उसे नहीं देती जैसा उसने अन्य का दिया था। यहीं से इर्विंग को अपने अस्तित्व के खिलाफ खतरे की बू आने लगती है और यहीं से सिलसिला छल और प्रपंच का शुरू होता है। इर्विंग जिम जारविस से अलग और नया तरीका मारियान को वश में करने का निकालता है। वह सर्वप्रथम उपन्यास को 'रचना–शिशु' का नाम देता है और दोनों को उसका सर्जक भी ठहराता है। औरत चाहे कितनी भी कठोर बनने की कोशिश क्यों न करे वह माँ के हृदय को शरीर से निकाल नहीं सकती। यह उसकी ताकत है परन्तु पुरुष इस ताकत को ही उसकी कमजोरी कैसे बना बैठता है यह मारियान के संदर्भ में देखा जा सकता है। गर्भपात की पीड़ा को सहकर वह शारीरिक तौर पर कमजोर होती है तो उपन्यास के लेखक के रूप में स्वयं को नदारद पाकर मानसिक क्षोभ होता है। क्योंकि ''शिशु बाप के नाम से ही जाना जाता है।'' इर्विंग के ये अट्हास करते शब्द नारी अस्मिता को चुनौती देते हैं।

भारत में नारी को गर्भपात का अधिकार मिला है। लेकिन उसका इस्तेमाल समाज में किस रूप से किया जा रहा है, यह समझने का विषय है। मारियान की तरह ही अनेक स्त्रियों को गर्भपात के लिए राजी या मजबूर कर दिया जाता है। गर्भपात मादा शिशु का भी करवाया जाता है तथा पति को अन्य परेशानियों से बचाने के तरीके के रूप में भी गर्भपात का सहारा लिया जाता है।

कठगुलाब में इर्विंग मारियान से सब उगलवाकर उसके हिस्से में कुछ नहीं आने देता, उसे महज कठपुतली बनाकर रखना चाहता है तो जिम जारविस प्यार, स्नेह, विश्वास, संतोष, दोस्ती सबको शब्दों में अभिव्यक्त करना चाहता है। यानि सत्ता पुरुष के हाथों में। औरत केवल साधन मात्रा। लेकिन मारियान यहीं जीवन की समाप्ति नहीं करती। वह दोबारा विवाह करती है, वह अलग बात है कि विवाह में स्थायित्व यहाँ भी नहीं ला पाती। वह एक सपफल लेखिका भी बनती है। मारियान 'वुमन ऑफ द अर्थ' की लेखिका भले ही न ठहराई गई हो वह अपनी अस्मिता के निर्माण की लंबी प्रक्रिया से गुजरती हुई अपने प्राप्य को प्राप्त अवश्य करती है। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि स्त्री किस प्रकार इस प्रक्रिया में निजी संवेदनाओं को बलिदान करती है लेकिन अपने गंतव्य तक पहुँचने में कोई कसर नहीं छोड़ती।

सीमोन द बोउवार ने स्त्री स्वांधीनता के बारे में कहा था– ''स्त्री स्वाधीनता का अर्थ हुआ स्त्री–पुरुष से जिस पारस्परिक संबंध को निभा रही है, उससे मुक्त हो, उसका अपना स्वतन्त्रा अस्तित्त्व होगा और वह पुरुष की होकर भी जिएगी। दोनों अपनी–अपनी स्वायत्तता में दूसरे का अनन्य रूप भी देखेंगे। संबंधों की पारस्परिकता और अन्योन्याश्रितता से चाह, अधिकार, प्रेम और आमोद–प्रमोद के अर्थ समाप्त नहीं हो जाएँगे और न ही समाप्त होंगे दो संवर्गों के बीच शब्द देना, प्राप्त करना, मिलन होना, बल्कि दासत्व जब समाप्त होगा और भी आधी मानवता का, तब व्यवस्था का यह सारा ढोंग समाप्त हो जाएगा।'' मारियान दासत्व पर टिके स्त्री–पुरुष संबंध को अस्वीकार करती है इर्विंग के साथ भी तथा दूसरे पति गैरी के साथ भी।

नर्मदा 'कठगुलाब' का तीसरा सशक्त पात्र है। यह पात्र अन्य महिला पात्रों से कई मायनों में भिन्नता रखता है। जहाँ मारियान और स्मिता उच्च–शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त आर्थिक रूप से सक्षम होकर स्त्री अस्मिता के मायने तलाश करती हैं वहीं नर्मदा केवल दर्जिन बीबी के माध्यम से पढ़ना–लिखना सीखती है लेकिन स्त्री अस्मिता के प्रश्न इन दोनों से कहीं ज्यादा उठाती है। नर्मदा पहले चूड़ी के कारखाने में काम करती थी। उसका बचपन चूड़ी के कारखाने की तपिस की भेंट चढ़ता है। वह दौड़ लगाती हुई सीसे से मढी लंबे जोड़ीदार के पास पहुँचाती है। यदि धीरे दौड़ती है और सीसा ठंडा हो जाता है तो चूड़ी नहीं बन पाती। लेकिन जिस गलियारे में नर्मदा का बचपन चक्कर काटकर ठंडा हो जाता है, उसकी परवाह किसी को नहीं है। नर्मदा यहाँ शारीरिक रूप से भी निर्बल हो जाती है और धीरे–धीरे मानसिक रूप से भी। प्रारंभ में वह लाल–हरी चूड़ियों को देखकर बहुत प्रसन्न हुई थी। उसे दौड़ लगाने में मजा भी खूब आया था लेकिन यह कार्य उसकी शारीरिक क्षमता के लिहाज से किसी भी मायने में सही नहीं था। संघर्ष में आनन्द प्राप्त करने के बारे में जर्मेन ग्रीयर ने कहा है –''प्रसन्नता का अर्थ बौराकर पगला जाना नहीं है, इसका अर्थ है अपनी उर्जा को खुद के चुने हुए उद्यम में उद्देश्यपूर्ण ढंग से लगाना। गौरव और आत्मविश्वास उसके अर्थ हैं।'' लेकिन नर्मदा यहाँ अपनी उर्जा को स्वयं चुने गए कर्म में नहीं लगा रही है न उद्यम उसका है और न ही उद्देश्य ही उसका है। वह जबरन् इस नरक में धकेल दी जाती है। नर्मदा यहाँ स्वयं नहीं आती वरन् उसकी बहन तथा जीजा के द्वारा इस कारखाने में काम के लिए भेजी जाती है। बचपन में ही नर्मदा के माता–पिता चल बसे तथा वह और उसका छोटा भाई भोला बहन गंगा तथा जीजा गनपत के घर शरण पा गए। पहले–पहल गनपत ने नर्मदा और भोला दोनों को चूड़ी के कारखाने भेजा। लेकिन भोला के द्वारा पैसे के प्रति लापरवाही ने उसे वहाँ से निकाल स्कूल में भर्ती करा दिया। लेकिन नर्मदा की कमाई से यहाँ पुरुष जाति को ही लाभ पहुँच रहा है। नर्मदा एक संवेदनशील स्त्री है जो भाई के बड़ा होने की बाट जोहती है– ''दोनों में से एक ने भी यह नहीं पूछा था कि जो कमाई वह कर रही थी उससे भी मरदजात का ही पेट भर रहा था। नर्मदा तो भाई को देख–देखकर ही मगन रहती थी उसका प्यारा भोला भाई पढ़–लिख जाएगा तो उसे सहारा देगा।'' एक बहुत ही बेचैन कर देने वाला प्रश्न यहाँ नर्मदा का चरित्र उठाता है कि जो स्त्री पूरे परिवार का पेट भर रही है वह कैसा सहारा–आसरा चाहती है। यह संस्कारवश है। वह प्रेम चाहती है। इज्जत चाहती है। वह स्वाभिमान से जीना चाहती है। नर्मदा बचपन से ही आर्थिक रूप से समर्थ दिखाई देती है लेकिन जिस समाज का वह अंग है वहाँ उसके अर्थ पर अधिकार अन्य का है। वह मजबूर है। वह बहन व जीजा के हाथ की कठपुतली मात्र बन जाती है।

मृदुला गर्ग इस पात्र के माध्यम से भारतीय समाज के संरचना की तरफ भी पाठक का ध्यान खींचती है। स्मिता, बहन और जीजा के चंगुल से निकल भागती है लेकिन नर्मदा कोई उपाय नहीं ढूँढ़ पाती। वह चूड़ी के कारखाने में काम करने लायक नहीं रहती तो वह घर–घर जाकर काम करने लग जाती है। नर्मदा के जीवन में एक नया बदलाव तब आता है तब वह दर्जिन बीबी यानि असीमा की माँ के घर काम करने लगती है। एक ओर जहाँ काम खुश करने से नर्मदा खुश है वहीं दूसरी ओर वह कुछ ऐसे प्रश्नों का सामना करती है जिनके उत्तर उसे आसानी से नहीं मिलते। ये प्रश्न स्त्री के प्रति पुरुष की सोच के ही नहीं थे, स्त्री के प्रति स्त्री की सोच के भी थे। ये प्रश्न भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों के भी थे। और ये प्रश्न पारिवारिक रिश्तों में स्त्री की संभावनाओं के भी थे। सबसे पहला संबंध परिवार के साथ ही बनता है लेकिन स्त्री की अस्मिता के दबाने–कुचलने की क्रिया भी पहले–पहल यहीं से प्रारम्भ होती है। पहले स्मिता, मारियान और अब नर्मदा भी परिवार में अपनों के बीच डर का सामना करती है – ''पर उसके मन का डर गया नहीं था। जब भी देखती कि जीजा उसकी तरफ देख रहा है, उसके बदन में झुरझुरी आ जाती। अचरज की बात यह थी, कि उन दिनों कभी–कभी गंगा को अपनी तरफ देखता पाकर भी, उसके बदन में झुरझुरी छूट जाती थी। यह तभी होता जब बहन और जीजा, खुसपुस करते–करते, रूककर, उसकी तरफ ताकते। तब उसके लिए जीजा और बहन की नजरों में फर्क करना मुश्किल हो जाता।''

स्त्री अस्मिता के संदर्भ में, केन्द्र में केवल पुरुष ही नहीं है। वरन् मौका मिलने पर स्त्री भी स्त्री का शोषण करती है। लेकिन स्त्री द्वारा किया गया शोषण किसी न किसी दबाव के कारण ही सामने आता है। नमिता आर्थिक रूप से स्वतन्त्रा नहीं थी इसलिए स्मिता के साथ अन्याय होता देखकर भी अन्जान बनी रही और गंगा उस पारम्परिक ढाँचे का शिकार हुई जिसमें स्त्री, पुरुष की हर बुराई पर पर्दा डालती है – ''मुझे तो किसी न ना पीटा। चाहो तो पड़ोसियों से पूछ लो।''

उपर्युक्त वाक्य उस समय का है जब असीमा धड़धड़ाती हुई गंगा के घर पहुँचती है। लेकिन यहाँ उसका कोई हथियार काम नहीं कर पाता। नर्मदा को अपने घर में रखने की बात का फैसला करने के लिए भी आखिर जीजा को ही बुलाया जाता है। यानि कर्त्ता–स्त्री लेकिन नियन्ता–पुरुष। 'कठगुलाब' के स्त्री पात्रों में केवल नर्मदा एक ऐसा पात्र है जो प्रेम करती है। वह बेहद संवेदनशील है। उसके ह्रदय में दया, करूणा, साहस और क्षमा जैसे गुण मौजूद है। वक्त आने पर वह क्रोध भी दिखाती है चाहे धोखे से पति बने जीजा के प्रति हो या प्रेमी के बिछोह का कारण बने असीम के प्रति हो। नर्मदा अशिक्षित है लेकिन जीने की चाह सबसे अधिक उसी के अंदर है। नमिता मानों मौके की तलाश में थी। पति के लाचार और बेबस हो जाने के बाद वह व्यवसाय अपने हाथ में ले लेती है और पति के प्रति उदासीन बन जाती है। मृदुला गर्ग नमिता के माध्यम से स्त्री अस्मिता के संदर्भ में एक अन्य प्रश्न उठाती है। यह प्रश्न सत्ता के हस्तांतरण का है। जब स्त्री के हाथों में सत्ता आ गई है तो अब वह पूर्वाग्रहों से संचालित होकर पुरुष पर अत्याचार करने लगती है। 'नारी और साहित्य' : 'स्वभाव, संस्कार या स्वयं अर्जित सच' नामक लेख में मृदुला गर्ग लिखती हैं – ''पर यहाँ सिक्के का दूसरा भी पहलू है। जाहिर है कि अगर नैसर्गिक स्वभाव के बल पर स्त्री को अलग जाति माना जाता है, तो फलस्वरूप, पुरुष को भी अलग जाति मानना होगा। और चूँकि तुलना केवल स्त्री और पुरुष के बीच है इसलिए हर बार, जब स्त्री जाति को कमतर। और तब पुरुष को भी रूढ़ पूर्वाग्रहों के बीच बंधकर रहना होगा। फिर जिसके हाथ में सत्ता होगी वह सामाजिक पूर्वाग्रह और कुंठित दृष्टि से संचालित होकर, अत्याचार करेगा दूसरा सहेगा।'' नमिता की भावुकता भी तब समाप्त हो गई। उसके पास शक्ति आ गई। लेकिन अधिकार और शक्ति मिल जाने पर नमिता न तो पत्नीत्त्व का निबाह करती है और न ही माता होने का। वह सबल भले ही बन गई हो लेकिन स्त्री सुलभ गुणों का "रस समाज के लिए बड़ी चेतावनी प्रस्तुत करता है। स्त्री अस्मिता के इन्हीं प्रश्नों से जूझते हुए महादेवी वर्मा अपने निबंध 'आधुनिक नारी – उसकी स्थिति पर एक दृष्टि' में लिखती हैं – ''अनन्त काल से स्त्री का जीवन तरल पदार्थ के समान सभी परिस्थितियों के उपयुक्त बनता आ रहा है, इसलिए उसकी कठिनता आश्चर्य और भय का कारण बन गई है। अनेक व्यक्तियों की धरणा है कि उच्छृंखलता की सीमा का स्पर्श करती हुई स्वतन्त्राता, प्रत्येक अच्छे बुरे बंधन के प्रति उपेक्षा का भाव, अनेक अच्छे–बुरे व्यक्तियों से संख्यत्व और अकारण कठोरता आदि उनकी विशेषताएँ हैं।''

यहाँ नमिता नारी अस्मिता के मायने तलाशती है लेकिन इस तरह का बदलाव उसके स्वयं के लिए घातक सिद्ध होता है। वह अपने ही बेटे प्रदीप द्वारा फिर से दबा दी जाती है। फिर से वही चक्र पुरुष समाज से स्त्री समाज तक और स्त्री से पुरुष समाज तक–पुनः पुनः लेकिन सहकारिता की भावना नहीं। सामंजस्य और सहयोग स्पष्ट नहीं होता।

असीमा नाम का ही अर्थ है जिसकी कोई सीमा न हो। यह नाम माता–पिता द्वार दिया गया नहीं था। पिता ने नाम रखा था 'सीमा'। लेकिन असीमा ने स्वयं यह नाम रखा। अपने नाम के निर्माण के समान ही असीमा अपने फैसले भी स्वयं लेती है। असीमा का पिता जिसे वह हरामी नम्बर एक कहकर पुकारती है उसे और उसके भाई असीम को छोड़कर चला गया। वह किसी अन्य औरत के साथ रहता है। लेकिन दर्जिन बीबी को कोई पछतावा नहीं है। वह आदर्श गृहिणी, कर्तव्यपरायण माँ, अपनी सीमाओं में आबद्ध, सतयुगी काल से चली आ रही, संतोषी भारतीय नारी है लेकिन वह निज की पहचान मिटने देना नहीं चाहती। वह देह प्रदर्शन के खिलाफ है। वह घर को बाजार नहीं बनाना चाहती। वह भोग की वस्तु बनने को कदापि तैयार नहीं।

असीमा की माँ मध्यवर्गीय समाज की महिलाओं के सामने एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करने में सक्षम हुई हैं जो अपनी मेहनत के बल पर एक अच्छी खासी मध्यवर्गीय

जिन्दगी बसर कर सके। वे कहीं भी भविष्य के प्रति संशकित नहीं है। अपने दोनों बच्चों को अच्छी परवरिश देती है। वह व्यक्तिगत आजादी को महत्त्व देती है और असीम को उसके पिता के पास बम्बई जाने पर कोई एतराज नहीं करती। दर्जिन बीबी को मात्रा शरीर बनकर जीना पसंद नहीं है। वे असीमा से कहती हैं–''मुझे मर्दों से नफरत नहीं है। जरूरी नहीं है कि सब मर्दों की ख्वाहिशें एक जैसी हो। मुझे मात्रा शरीर बनकर रहना पसंद नहीं था। मैं दया की पात्र भी नहीं बनना चाहती थी। यह मेरी किस्मत थी कि मुझे इन्हीं के बीच चुनना पड़ा।''

कठगुलाब की असीमा पीढ़ियों में दिखाई दे रही फाँक को भी सही से समझ पा रही है। वह स्मिता के नाम के पीछे जारविस जुड़े रहने को सही ठहराती है क्योंकि उससे स्मिता का अमरीका में रहना आसान है। लेकिन वहीं अपनी माँ का जिक्र करती हुई कहती है – 'लड़की मेरी माँ की तरह सिद्धान्तों की मारी हुई नहीं थी, वरना कहती, ''तलाक के बाद मैं पति का नाम क्यों माँगू।'' मृदुला गर्ग यहाँ पीढ़ियों के अलग–अलग द्वन्द्व भी देखती हैं और उनमें अन्तर भी। चूँकि कठगुलाब 20वीं सदी का उपन्यास है, वह समय के सापेक्ष चलता है। असीमा की माँ असीमा को बिना विवाह किए भी विपिन के साथ रहने की अनुमति देती है, यह नई सोच का परिचायक है।

असीमा की माँ को यदि पहली पीढ़ी मानें तो असीमा, स्मिता, मारियान, नमिता तथा नर्मदा उससे अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं। नमिता की बेटी नीरजा तीसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें स्त्री अस्मिता के मायने भी भिन्न है। वह पुराने और नए के बीच झूलती नजर आती है। वह मानती है कि उसकी माँ से अधिक प्रेम उससे उसके पिता ने किया, लेकिन तमाम कारोबार, फैक्ट्री, जायदाद सबकुछ उसके भाई प्रदीप के नाम कर गए। भले ही कानून ने बेटे और बेटी को समान अधिकार दिए परन्तु स्त्री अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कोई प्रयास नहीं करती। यहाँ नीरजा के माध्यम से मृदुला गर्ग दो प्रश्न एक साथ करती है।

पहला प्रश्न सामाजिक रुढ़ियों से जुड़ा है कि, क्या यही रीत और परंपरा है इसलिए? और दूसरा प्रश्न स्त्री अस्मिता से सरोकार रखता है। क्या स्त्री को अपनी अस्मिता की पहचान हो जाने के कारण, वह स्वाभिमान के चलते मांगना नहीं चाहती?

'कठगुलाब' में नारी अस्मिता के प्रश्न तलाशते वक्त सबसे पहले एक बात की ओर ध्यान जाता है कि नारी और पुरुष में मोटे तौर पर भिन्नता क्या है? नारी माँ बन सकती है लेकिन पुरुष नहीं। 'कठगुलाब' के नारी पात्राों में नमिता और दर्जिन बीबी को छोड दे तो अन्य सभी माँ नहीं बन पाती। नीरजा और विपिन अपने आपको यंत्र में तब्दील करने की कोशिश करते हैं परन्तु खाली हाथ ही रहते हैं। अपनी अस्मिता को नकार कर महज यंत्र बन जाना भी समाज के लिए घातक ही सिद्ध होता है इसका प्रमाण है – 'कठगुलाब'।

मृदुला गर्ग नारी अस्मिता के सही मायने सृजन में तलाश करती हैं। असीमा और स्मिता 'गोघड़' में जाकर समाज सेवा का व्रत लेती हैं तथा मारियान जो पहले ही साहित्य सृजन में लीन है, को भारत आने का न्यौता देती हैं। नर्मदा दर्जिन बाबी के बाद बुटीक की सुपरवाइजर बन जाती है। इस प्रकार मृदुला गर्ग कठगुलाब में नारी अस्मिता के जो प्रश्न उठाती है उनकी जड़ों में जो मुख्य कारण नजर आते हैं वे पितृसत्तात्मकता से ही जुड़े हैं क्योंकि स्त्री की मानसिकता के स्तरों को पितृसत्तात्मकता मुख्य रुप से प्रभावित करती है।

कठगुलाब के माध्यम से रचनाकार कुछ सवालों से जूझती है –

1. मैं क्या हूँ?
2. मेरे जीवन का ध्येय क्या है?
3. मैं संतुष्टि चाहूँ या सफलता?
4. सफलता का क्या अर्थ है?
5. राष्ट्र, धर्म और समाज के बीच क्या संबंध है???

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. इन्द्रप्रस्थ भारती – वर्ष–25, अंक–2, अप्रैल–जून, 2013.
2. कठगुलाब–मृदुला गर्ग, सातवाँ संस्करण, 2013.
3. शृंखला की कड़ियाँ–वर्मा महादेवी लोकभारती प्रकाशन, प्रथम सजिल्द संस्करण, 2008.
4. नवभारत टाइम्स : सप्ताह का इंटरव्यू : कमला भसीन से सैयद परवेज की बातचीत के आधार पर दिनांक 4 अप्रैल 2015.
5. स्त्री : उपेक्षित सीमोन द बोउवार अनु. डॉ. खेतान, संस्करण–2002.
6. समागम – गर्ग मृदुला, सामयिक प्रकाशन, संस्करणः 2004.